आमुख

रामकथा का संक्षिप्त परिचय

आमुख

रामकथा का संक्षिप्त परिचय

भारतीय रामकथा की सुदीर्घ परम्परा हमें यथार्थ से जूझते हुए आदर्श मानव के प्रति आस्था रखने को कहती है। हमारी भारतीय संस्कृति को संरक्षित करने का काम रामकथा के द्वारा ही हुआ है।

पौराणिक आख्यान के रूप में रामकथा अत्यन्त प्राचीन है। प्राचीन साहित्य में सब से पहले रामकथा का वर्णन हमें वैदिक साहित्य में मिलता है।

वैदिक साहित्य में रामकथा -

वैदिक काल में रामकथा संबंधी गाथाएँ प्रसिध्द हो चुकी थीं। इनकी समस्त, विस्तृत सूचना वैदिक साहित्य में नहीं मिलती। किन्तु अनेक स्थलों पर महत्वपूर्ण पात्रों का नामोल्लेख अवश्यक मिलता है। उसमें इक्ष्वाकु, दशरथ, राम, जनक, सीता आदि नामों का उल्लेख मिलता है।

इक्ष्वाकु इस पात्र का उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में हुआ है। दशरथ का नाम ऋग्वेद में भी मिलता है। केवल इसी आधार-पर वैदिक साहित्य में रामकथा की उपस्थिति प्रमाणित नहीं होती। सिर्फ हम इतना ही कहेंगे की इन वैदिक नामों के आधार पर ही राम, सीता आदि नाम रखे गये हैं।

वाल्मीकि की रामकथा -

राम का सर्वप्रथम उल्लेख वाल्मीकि रामायण में ही हुआ है। वाल्मीकि को नारदजी ने पहले रामकथा सुनायी थी और उसका विस्तार आदिकवि वाल्मीकि ने अपनी कल्पना द्वारा करके `रामायण` जैसे सुंदर ग्रंथ की रचना की।

वाल्मीकि की मूल कथा अयोध्या काण्ड से लेकर युध्द काण्ड तक मानी जाती है। बाल काण्ड तथा उत्तर काण्ड प्रक्षिप्त माना गया है।

वाल्मीकि के राम अवतारी राम हैं। वे एक तेजस्वी वीर क्षात्रिय राजपुत्र हैं। जिनका पराक्रम अद्भुत है, जिनकी मर्यादा और त्याग अनुकरणीय है। उनमें सामान्य व्यक्तियों के समान सुख और दु:ख की अनुभूतियाँ हैं। इनकी रामकथा परवर्ती साहित्य की मूल प्रेरणा है।

महाभारत में रामकथा -

वाल्मीकि रामायण के बाद रामकथा का विस्तृत रूप हमें महाभारत में देखने को मिलता है। `रामायण` और `महाभारत` उपजीव्य काव्य माने जाते हैं। `महाभारत` की रचना `रामायण` के बाद की गई है। इसलिए `रामायण` को `महाभारत` के लिए उपजीव्य काव्य मानना पडता है।

`महाभारत` में रामकथा विभिन्न रूपों में उपलब्ध होती है। डॉ. फादर कामिल बुल्के के मतानुसार -"वह चार स्थानों में पायी जाती है - १) आरण्यक पर्व, २) द्रोण पर्व, ३) शान्ति पर्व, ४) रामोपाख्यान।"[१]

रामोपाख्यान के रूप में भी रामकथा का विस्तृत रूप `महाभारत` के वन पर्व में उपलब्ध है। `महाभारत` में राम को अवतार-रूप में चित्रित किया है।

बौद्ध रामकथा -

महाभारत के अतिरिक्त बौद्ध साहित्य में भी रामकथा आयी है। ईसा के तीन सौ वर्ष पूर्व रामकथा अधिक लोक-प्रिय हो गयी थी। अत: इसी

को बौद्धों ने अपने धार्मिक सिध्दान्तों के अनुसार बना दिया है। यह कथा जातक साहित्य में सुरक्षित है। वह तीन जातकों में मिलती है - १) दशरथ जातकम्। २) अनामक जातकम्। ३) दशरथ कथानकम्।

बौद्ध साहित्य में राम के राज-त्याग को महत्व दिया गया है। क्योंकि बौद्ध धर्म में हमें त्याग का ही महत्व देखने को मिलता है। बौद्ध धर्म में ये तीन जातक ग्रंथ ही रामकथा के संदर्भ में उल्लेखनीय हैं। बाद में इस साहित्य में रामकथा का विकास नहीं हो पाया।

जैन साहित्य में रामकथा -

भारतीय रामकथा की परंपरा का अत्यधिक विस्तृत रूप जैन साहित्य में प्राप्त होता है। जैन आचार्य राम तथा रामकथा के पात्रों को जैन मतावलम्बी के नुसार चित्रित कर उन्हें अपने धर्म में बहुत महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। राम, लक्ष्मण तथा रावण न केवल जैन मतावलंबी है, बल्कि जैनियों के त्रिषष्टि महापुरुषों में इन तीनों की गणना होती है।

डॉ. कामिल बुल्के ने `रामकथा` में जैन साहित्य की रामकथा का बडा विस्तार पूर्वक विवेचन किया है।[२] इसकी विशेषता निम्नलिखित है -

१) त्रिषष्टि शलाका महापुरुष - रामकथा के तीन प्रमुख पात्र राम, लक्ष्मण तथा रावण क्रमश: आठवें बलदेव, वासुदेव तथा प्रतिवासुदेव माने जाते हैं।

२) बलदेव तथा वासुदेव किसी राजा के भिन्न भिन्न रानियों के पुत्र होते हैं।

३) राक्षस और वानर, विद्याधर वंश की दो भिन्न मनुष्य जातियाँ हैं।

४) इसमें रामचरित् संबंधी अलौकिक घटनाओं को लौकिक रूप में चित्रित करनेका प्रयास किया गया है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि जैन रामकथा वाल्मीकि `रामायण` के बाद की है।

जैन रामकथा की दो परंपराएँ डॉ. बुल्के ने कही है -

१) विमलसूरि की रामकथा।

२) गुणभद्र की रामकथा।[३]

विमलसूरि की रामकथा वाल्मीकि रामायण के अधिक निकट है। दोनों में राम का उल्लेख मिलता है।

संस्कृत साहित्य की रामकथा -

वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत के बाद संस्कृत भाषा में बहुत ही रामकथाएँ लिखी गई हैं। रामकथा संबंधी संस्कृत रचनाएँ ब्राह्मण ग्रंथों की कथाओंपर ही अधिकतर आधारित हैं।

संस्कृत साहित्य में रामकथा का अपार भंडार है। अध्ययन की सुविधा के लिए उसे दो विभागों में प्रस्तुत किया जाता है -[४]

१) धार्मिक साहित्य।

२) लौकिक साहित्य।

धार्मिक साहित्य के अंतर्गत पुराण आते हैं। जिनमें रामचरितसंबंधी जानकारी प्राप्त होती है। उनमें हरिवंशपुराण, मत्स्यपुराण, विष्णु-महापुराण, भागवत महापुराण, कूर्म पुराण, अग्निपुराण, लिंगमहापुराण, नारदीय पुराण, गरुड महापुराण, स्कंदपुराण, पद्मपुराण, शिवपुराण, कल्किपुराण आदि में रामकथा का उल्लेख हुआ है।

उसके बाद सांप्रदायिक रामायणों में भी रामकथा पायी जाती है। उसमें योगवासिष्ठ रामायण, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनंद रामायण, तत्वसंग्रह रामायण, मंत्र रामायण आदि में रामकथा प्राप्त होती है।

संस्कृत के लौकिक साहित्य में रामकथा हमें महाकाव्यों, खण्डकाव्यों, स्फुटकाव्यों, नाटकों तथा कथाओं आदि में मिलती हैं।

हिंदी साहित्य में रामकथा -

भारतीय रामकथा की परंपरा हिंदी साहित्य में भीपायी जाती है। हिंदी रामकाव्य में तुलसी मील का पत्थर है। रामकाव्य परंपरा की दृष्टि से तुलसी प्रथम कवि होते हुए भी उन्होंने प्रचलित कथा को अद्वितीय उत्कर्ष और सम्पूर्णता से प्रस्तुत किया है। इसलिए वे उनके परवर्ती कवियों के लिए अनुकरणीय बन गये हैं।

तुलसी के पूर्व भी रामकथा पर लिखा गया है। उनमें से विष्णुदासजी ने ` वाल्मीकि रामायण ` को आधार मानकर ` रामायण कथा ` यह रचना की है। यह रचना तीन काण्डों में विभाजित है - बाल काण्ड, हनु काण्ड और उत्तर काण्ड। हिन्दी रामकथा साहित्य की यह प्रथम रचना है।

विष्णुदास के बाद १३४२ में मूमति ने ` रामचरित रामायण ` यह रामकथा लिखी। लेकिन इसका उल्लेख मात्र मिलता है। तुलसीदासजी के समकालीन कवियों ने भी रामकथा लिखी है। उनमेंसे मुनिलालजी ने रीतिशास्त्र को आधार मानकर ` रामप्रकाश ` यह रामकथा लिखी। उसके बाद नाभादास, केशवदास और सेनापति ने भी रामकथा लिखी है। नाभादासजी

के रामभक्ति संबंधी कुछ सुन्दर पद हमें देखने को मिलते हैं। केशव की ` रामचंद्रिका ` तो राम-जीवन का महाकाव्य हैं।

लेकिन हिंदी साहित्य में तुलसीदासजी की रचनाओं के द्वारा रामकथा को महत्व मिलता है। क्योंकि तुलसी विद्‌वान हैं, दार्शनिक विचारक हैं और सबसे बढकर भक्त हैं। उनकी बुद्धि, भावना तथा वाणी राममय है। तुलसीदासजी ने अपनी सभी रचनाओं में राम का गान किया है। जैसे ` रामचरितमानस,`` विनयपत्रिका,`` कवितावली,` ` गीतावली,` ` बरैरामायण,`` रामाज्ञाप्रश्न,`` जानकी मंगल,`` रामलला नहछू ` आदि में।

तुलसीदासजी की महत्वपूर्ण रचना ` रामचरितमानस ` है। यह हिंदी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य माना जाता है। इसका कथानक भारतीय साहित्य में चिरकाल से प्रचलित ` रामकथा ` पर आधारित है। इसकी रचना ` नानापुराण, निगमागम ` के अनुसार की गई है। लेकिन उन्होंने ` वाल्मीकि रामायण ` को अपनी कथा का मुख्य आधार माना है। यह रचना सात काण्डों में विभाजित है। इसमें राम के सम्पूर्ण जीवन चरित को नहीं लिया गया, बल्कि सिर्फ राम-जन्म से लेकर राम-राज्यारोहण तक की कथा को इसमें स्थान दिया गया है।

तुलसीदासजी ने ` वाल्मीकि रामायण ` को अपनी कथावस्तु का आधार माना लेकिन उन्होंने अपने उद्देश्य के अनुसार स्वतंत्रतापूर्वक वाल्मीकि के कथानक में नये प्रसंगों का समावेश किया है। जैसे वाल्मीकि ने राम को अवतारी माना लेकिन तुलसीने राम को परात्पर ब्रह्म माना है।

तुलसीदासजी ने ` रामचरितमानस ` की प्रस्तावना में यह लिखा है कि वाल्मीकि की तरह काव्य रचना मात्र उनका उद्देश्य नहीं था। इसलिए उन्होंने लिखा है -

" कवि न होऊँ नहीं चतुर कहावऊँ ।
मति अनुरूप रामगुन गावहऊँ ।
कहँ रघुपति के चरित अपारा ।
कहँ मति मोरि निरस संसारा ।। "[५]

तुलसीदासजी कहते हैं कि राम के सुयश का वर्णन करनेसे ही कोई काव्य सज्जनों के मन को अच्छा लगनेवाला बनता है । अत: यह स्पष्ट होता है कि राम-भक्ति का प्रचार करने के लिए होउन्होंने काव्य लिखा है ।

तुलसीदासजी राम को परात्पर ब्रह्म के साथ-साथ मानव आदर्श के लिए उन्हें दशरथ-पुत्र मानते हैं । मानस के आरंभ में दशरथ सुत राम अवतारी हैं । इसप्रकार तुलसीदासजी हमें मानस में अवतारत्व पर विश्वास रखने के लिए कहते हैं । यहाँ उनके राम सभी देवताओं से बढकर सृष्टि नियन्ता पूर्ण ब्रह्म हैं - " विष्णु कोटि सम पालन कर्ता रुद्र कोटि सतसम संहर्ता । "[६]

डॉ. रामकुमार वर्मा तुलसी के राम के बारेमें कहते हैं कि -
" तुलसीदास ने उनके राम के व्यक्तित्व को इतना लोकव्यापी और मंगलमय रूप दिया है कि उसके स्मरण मात्र से हृदय में पवित्र और उदात्त भावना जाग उठती है । परिवार और समाज की मर्यादा स्थिर रखते हुए उनका चरित्र इतना महान है कि उन्हें मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में स्मरण किया जाता है ।"[७]

तुलसीदासजी ने राम में शील, शक्ति और सौंदर्य का बहुत अच्छा समन्वय दिखाया है जैसे -

" राम रूप गुन सील सुभाऊ । प्रभुदिन होई देखि सेनि राऊ ।

अथवा

सुनि सीता पति सील सुभाउ
मोद न मन तन पुलक नयन जल सो नर खेहर खाऊ ।[८]

तुलसी के राम सर्वशक्तिमान हैं। वे अपनी शक्ति से भक्तों की रक्षा और दुष्टों का नाश करते हैं।

तुलसीदासजी के राम के सौंदर्य पर हजारों कामदेव न्यौछावर किये जा सकते हैं। उनके सौंदर्य को देखकर हमें ऐसा लगता है कि विधाता ने मानो विश्व के समस्त सौंदर्य को एकत्रित करके ही राम को बनाया है।

इसप्रकार तुलसीदासजी ने अपनी रामकथा में राम को सगुण-निर्गुण नर-नारायण और आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श राजा आदि का एक-साथ समन्वय दिखाया है। ऐसे राम की महिमा उन्होंने मानस-रूपी सरोवर में भक्तारूपी चार घाट के द्वारा सामान्य मनुष्यों को समझायी है।

तुलसी बार-बार अनेक प्रकार से राम का लीला गान करते अघाते ही नहीं। उनकी `विनयपत्रिका` तो एक ऐसी रचना है। जिसमें सांसारिक संघर्ष से थके हुए भक्त अपना एकमात्र आश्रय राम को मानकर स्वयं को इसमें पूर्ण समर्पित कर देते हैं।

निष्कर्ष :

विविध धर्मीय साहित्य में विविध रामकथाओं की उत्पत्ति हुई है और वह कथा एक दूसरे से भिन्न होकर भी उनमें मौलिक एकता हमें दिखाई देती है। वैदिक साहित्य में रामकथा का बहुत कम प्रचार हुआ है। उसके बाद रामकथा का विकास देखने पर यह समझ में आता है कि उसका प्रारंभ वाल्मीकि से ही हुआ है। आगे चलकर वाल्मीकि रामायण` के तत्वों को लेकर ही `महाभारत`, बौद्ध, जैन और संस्कृत साहित्य में भी रामकथा का परिचय हमें देखने को मिलता है।

हिंदी साहित्य की रामकथा में तुलसीदासजी के पूर्ववर्ती तथा परवर्ती कवियों ने अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार रामकथा पर लिखा है। परंतु उनमें तुलसी का स्थान सर्वोच्च रहा है। रामकाव्य के क्षेत्र में तुलसीदासजी ऐसे केंद्रीय कवि है, जो अपनी प्रतिभा के कारण समूचे युग-जीवन पर छाये रहे हैं। उनका `रामचरितमानस` भारतीय संस्कृति के इतिहास में एक बडी ही महत्वपूर्ण घटना है।

इसप्रकार रामकथा की लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढती जा रही है। और वह हमारी भारतीय संस्कृति में व्याप्त हो गई है। उसकी अद्वितीय लोकप्रियता निरंतर अक्षुण्ण ही नहीं, वरन् शताब्दियों तक बढती ही रही है। उसका कारण यही है कि - मानव हृदय को आकर्षित करने की अद्भुत शक्ति रामकथा में ही विद्यमान है। वह अन्यत्र दुर्लभ है।

संदर्भ सूची

१. रामकथा (उत्पत्ति और विकास)
डॉ. कामिल बुल्के
हिंदी परिषद प्रकाशन, प्रयाग १९६२

२. ` वहीं `
पृ. १०६

३. ` वहीं `
पृ. ११२

४. ` वहीं `
पृ. ११६

५. ` रामचरित मानस `
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर
७३ वा संस्करण २०४५ संवत

६. रामकथा के नारी पात्र
डॉ. आशा भारती
पृ. ३९
शारदा प्रकाशन, प्र.सं. १९८७

७. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
डॉ. रामकुमार वर्मा
नेशनल प्रेस, इलाहाबाद द्वि.सं. २०२१ संवत

८. ` रामचरित मानस `
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर
७३ वा संस्करण २०४५ संवत

संत तुलसीदास